वृक्षों को गोद लेने की योजना बननी चाहिए

- डॉ. महेश परिमल

हर साल पर्यावरण दिवस आता है और कई घोषणाओं और दिखावे के बाद चुपचाप चला जाता है। बरसों से यही सिलसिला जारी है। आज जितने पौधे लगाए नहीं जाते, उससे कई गुना पेड़ काट दिए जाते हैं। कभी विकास के नाम पर, तो कभी मानव की दंभी नीति के नाम पर। पूरे विश्व को बचाने की शक्ति है, तो वह है केवल पेड़ में। पेड़ ही पूरे विश्व के बिगड़ते पर्यावरण को बचा सकते हैं। हमारे देश में पेड़ तो रोज लाखों लगाए जा रहे हैं, पर उन पेड़ों की देखभाल नहीं हो पा रही है, इसलिए उनकी अकाल मौत हो रही है। सरकार जिस तरह से जू के जानवरों को दत्तक देती है, ठीक उसी तरह यदि पेड़ों को भी दत्तक (गोद) देने की योजना बनाई जाए, तो कई पेड़ अकाल मौत से बच सकते हैं। अब केवल पर्यावरण दिवस से ही काम नहीं चलेगा, पर्यावरण सप्ताह मनाया जाना चाहिए।

आज की पीढ़ी को तो यह याद भी नहीं होगा कि इस देश में पेड़ों को बचाने के लिए कभी चिपको आंदोलन चलाया गया था। सुंदरलाल बहुगुणा के नेतृत्व में 1973 में चिपको आंदोलन ने पेड़ों को बचाने की दिशा में जो कार्य किया, वैसा कार्य उस आंदोलन के बाद देश में नहीं हो पाया है। कैसी स्थिति होगी - जब कोई पेड़ काटने के लिए आगे बढ़ रहा हो, तभी अचानक महिलाएं उस पेड़ से चिपक जायें। वे कहें यह पेड़ तभी कटेगा, जब तुम्हारे औजार का पहला वार हम पर होगा। यह सुनकर पेड़ काटने वाला थम जाता। कुछ सोचता, फिर पेड़ काटने का फैसला बदल देता।

लगातार तपती धरती, अनियमित बारिश आज पर्यावरण के महत्व को समझा रही है। 45 डिग्री के तापमान में लोग छाया का महत्व समझने लगे हैं। विकास की दौड़ में हमने पर्यावरण को भूला दिया है। बिगड़ते पर्यावरण के लिए हम सब दोषी हैं। प्रकृति का चक्र तोड़ने में हमने महारथ हासिल कर ली है। पर अब उसे मूल रूप में लाने की क्षमता हममें नहीं है। हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिए। आज जितनी तपिश है, वह अभी और बढ़ेगी, हमें इसके लिए तैयार रहना होगा।

जब हमारे सामने नई सोसायटी या नए प्लाट की स्कीम की घोषणा होती है, तो यह प्रलोभन अवश्य दिया जाता है कि वहां पर मंदिर है। एटीएम भी है। लेकिन अब समय बदल रहा है। अब यह घोषणा होगी कि आप जिस सोसायटी में आ रहे हैं, वहां 100 घटादार वृक्ष हैं। चिड़ियों की चहचहाट है। तोते आवाज करते हैं। मोर आंगन में नाचते हैं। यह स्थिति अभी भले ही हास्यास्पद लग रही है, पर सच यही है कि अब वह दिन दूर नहीं, जब हमें ऐसी स्थिति तैयार करनी होगी।

जिस तरह से हमारे कंप्यूटर, मोबाइल पर हेकर्स की नजर होती है, वैसे ही आज पूरी मानव जाति ही अपने-अपने तरीके से पृथ्वी पर नजर गड़ाए हुए है। रासायनिक खाद का इस्तेमाल करके हमने पृथ्वी के 10 फीट नीचे तक रहने वाले सांपों का खात्मा कर डाला है। यही सांप जो कई दृष्टि से हमारी खेती के लिए उपयोगी थे। अब वे सांप हमें देखने को नहीं मिलते। उन्हें खो देने के बाद भी हमें अभी तक होश नहीं आया है। पृथ्वी पर कई तरह के जीव-जंतु खुशी-खुशी रह सकें, इसके लिए पहले हमारे पास इसके लिए विपुल संपदा थी। अब हम उस संपदा से विमुख होते जा रहे हैं। पिछले साल पर्यावरण दिवस की थीम प्लास्टिक था। इस बार की थीम एयर पाल्यूशन थी। लोग प्रकृति के बदल जाने पर टीका-टिप्पणी करते रहते हैं। पर स्वयं जो प्रकृति पर अत्याचार कर रहे हैं, उस पर जरा-सा भी विचार नहीं करना चाहते। प्रकृति के साथ हम किस तरह का व्यवहार कर रहे हैं, इस दिशा में कौन सोचता है?

प्रकृति समय-समय पर अपनी नाराजगी का संकेत देती रहती है। पर यह मानव जाति सुधरने का नाम ही नहीं ले रही है। भीषण गर्मी से त्रस्त लोग यही कामना करते हैं कि बहुत हो गया, अब तो बारिश हो ही जानी चाहिए। बारिश जितनी देर से आती है, उतनी देर में मानव जीवन छटपटा उठता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि बिगड़ते पर्यावरण के लिए सरकार पर दोषारोपण करने के बजाए उसे ठीक करने की जिम्मेदारी खुद लेने की है। जिस तरह से मंदिर में हम भगवान की पूजा करते हैं, ठीक उसी तरह अब हमें प्रतिदिन वृक्ष की पूजा करने की आदत डालनी होगी। जिन्होंने भी धर्म को सुधारने का ठेका ले रखा है, विभिन्न धार्मिक चौनल्स में प्रवचन देते रहते हैं, वे लोगों को प्रेरित करें कि बहुत हो गया प्रवचन सुनना, अब तो यदि कोई कर्म ही करना है, तो वह है पौधे लगाना और उसकी देखभाल करना। केवल पीपल के वृक्ष की पूजा करना ही धर्म नहीं, बल्कि प्रत्येक पेड़-पौधे की पूजा करना जीवन की आदत में शामिल करना होगा। जरा गौर से देखो, वृक्ष हमें केवल फल ही नहीं देते, बल्कि छाया भी देते हैं। पक्षियों को आसरा देते हैं। हमें ऑक्सीजन देते हैं। हवा शुद्ध करते हैं। उसके सूखे पत्तों-डंठल से खाद बनती है। पर्यावरण को लेकर मानव की अनदेखी पृथ्वी के सभी जीवों के लिए महंगी साबित हो रही है।

पर्यावरण को अब हमें गंभीरता से लेना होगा। यह मजाक का विषय कतई नहीं है। हमने अपने आराध्य को नहीं देखा, पर हम उसकी प्रतिदिन पूजा करते हैं, इसी तरह पृथ्वी पर जीवित देव यानी पेड़-पौधों की प्रतिदिन पूजा करनी होगी। ये हमारे लिए साक्षात देव हैं। ये इतने सरल हैं कि इन पर हमें घी के दीये नहीं जलाने होते, इसके अलावा इन पर प्रसाद भी नहीं चढ़ाया जाता। अब वृक्ष को ही भगवान मानने का समय आ गया है। वृक्ष पूजे जाएंगे, तभी उस पर बैठ पाएगी सोने की चिड़िया३.

<u>एक पेड़ की कीमत</u>

एक सामान्य पेड़ साल भर में करीब 20 किलो धूल सोखता है।

हर साल करीब 700 किलोग्राम ऑक्सीजन का उत्सर्जन करता है।

प्रतिवर्ष 20 टन कार्बन डायऑक्साइड को सोखता है।

गर्मियों में एक बड़े पेड़ के नीचे औसतन चार डिग्री तक तापमान कम रहता है।

80 किलोग्राम पारा, लीथियम, लेड आदि जैसी जहरीले धातुओं के मिश्रण को सोखने की क्षमता।

हर साल करीब 1 लाख वर्ग मीटर दूषित हवा फिल्टर करता है।

<u>पेड़ के ये हैं बड़े लाभ</u>

घर के करीब एक पेड़ अकॉस्टिक वॉल की तरह काम करता है। यानी शोर/ध्वनि को सोख लेता है।

विस्कान्सिन विश्वविद्यालय ने अध्ययन में बताया है कि जिनके घरों के आसपास पेड़ होते हैं, उन्हें तनाव और अवसाद की आशंका कम होती है।

केनेडा के जर्नल साइंटिफिक रिपोर्ट्सक के अनुसार घर के पास करीब 10 पेड़ हैं, जो जीवन 7 साल बढ़ जाता है।

इलिनॉय यूनिवर्सिटी ने रिसर्च में बताया है कि घर के पास पेड़ हैं, तो नींद अच्छी आती है। विशेषकर वृद्धावस्था में।

(प्रस्तुतिः मनुज फीचर सर्विस)

नोटः मनुज फीचर में छपे लेखों के विचार लेखक के अपने हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यहां प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए करने हेतु किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। मनुज फीचर सर्विस का उल्लेख अवश्य करें।